Krishna Nand, B.A. II, [illegible]

प्रश्न - दैनिक जीवन की भूलों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों का उल्लेख करें।

Ans - मनुष्य अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार की भूलें करता है इनमें अधिकांश भूलें अनजाने हुआ करती हैं जिन्हें प्रायः संयोगवश होने वाली गलती मानकर कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता। ऐसी भूलों की निश्चित सूची बनाना कठिन है। फिर भी ऐसी कुछ भूलें आम तौर पर प्रायः हर व्यक्ति अपने-अपने प्रतिदिन के क्रियाकलाप के सिलसिले में करता है। इनमें कुछ महत्वपूर्ण भूलें निम्न लिखित हैं।

(1) नामों को भूलना (Forgetting of names) अक्सर हम अपने पूर्व परिचित व्यक्ति, स्थान या किसी महत्वपूर्ण तिथि आदि को भूल जाते हैं और ऐसी भूलों के स्पष्ट कारण भी नहीं मालूम पड़ते हैं। फ्रॉयड (Freud) ने इन भूलों का कारण व्यक्ति की इच्छा बताया है। फ्रॉयड के विचारानुसार भूलना एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जिसमें हम उन्हीं विषयों को भूलते हैं जिन्हें हम अचेतन रूप से भूल जाना चाहते हैं। अतः दैनिक जीवन में पूर्व परिचित व्यक्तियों, स्थानों या महत्वपूर्ण तिथियों को [illegible]

अचेतन रूप से भूलने की इच्छा रखने के कारण ही भूलते हैं यही कारण है कि इस प्रकार से भूले गए अनुभवों के स्पष्ट कारण मालूम नहीं पड़ते हैं

उदाहरणस्वरूप फ्रायड ने ऐसी कुछ उदाहरणों का जिक्र किया है जिनके विश्लेषण करने के बाद उनके कारणों का पता चलता है। इन्होंने एक क नाम के व्यक्ति का उदाहरण दिया है। वह युवक एक व्यक्ति से प्रेम करता था, परंतु उसके प्रेम-भाव से युवती पूर्णतः अनभिज्ञ थी। अर्थात् प्रेम-प्रसंग एकतरफा था। कुछ समय बाद वह युवती किसी ख नाम के व्यक्ति के साथ प्रणय-सूत्र में बँध गई। ख नाम के व्यक्ति को क नाम का व्यक्ति पहले से जानता था। क्योंकि वे दोनों किसी व्यापार में साथ थे। पर उस युवती के विवाह के बाद क, ख का नाम अचानक भूल गया और जब भी उससे उनकी भेंट होती थी, दूसरों से उसका नाम और पता पूछता था। इस उदाहरण को उद्धृत करते हुए फ्रायड ने बताया कि वह व्यक्ति क वस्तुतः अपने पूर्व परिचित मित्र ख के साथ का अपना परिचय भूल जाना चाहता था। क्योंकि वह व्यक्ति उसका प्रतिद्वंदी बन गया था और क को अपने प्रेम में निराशा हुई। पर उसकी यह इच्छा अचेतन रूप से उत्पन्न हुई और अचेतन में ही दमित हो गई। ख के साथ का अपना परिचित भूल जाने के फलस्वरूप वह उस युवती को अब भी अपनी संभावित पत्नी के रूप में देख सकता था। इसप्रकार ख के नाम को भूल जाने के फलस्वरूप एक तरफ उसके अचेतन में दमित इच्छा। प्रेमिका युवती के साथ विवाह करने की इच्छा) संतुष्ट होती है और दूसरी तरफ व्यक्ति के मन में उत्पन्न निराशा एवं द्वेष की भावना के कारण उत्पन्न तनाव की स्थिति का निराकरण भी हो जाता है और व्यक्ति उसके दुष्परिणामों से बच जाता है अतः नामों को अनजाने में भूलने के पीछे अचेतन में दमित इच्छाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

Krishna Nand B.A I Hon's (3)

(ii) बोलने की भूलें (Slip of tongue) हम अपने प्रतिदिन के जीवन में प्रायः बोलने के क्रम में कुछ छोटी-मोटी गलतियाँ कर बैठते हैं, जैसे किसी अविवाहित महिला को गलती से पुत्री या कुमारी का संबोधन करने की जगह श्रीमती या देवी का संबोधन करना, किसी की प्रशंसा करते-करते एक-आध शब्द अप्रशंसा का बोल देना इत्यादि। साधारण जीवन में ऐसी गलतियों पर प्रायः हमारा ध्यान नहीं जाता, अथवा हम इसकी अवहेलना कर देते हैं। परंतु फ्रायड ने ऐसी अशुद्धियों के पीछे भी अचेतन का महत्व बतलाया है। इनके अनुसार ऐसी गलतियों द्वारा अनजाने में व्यक्ति के अचेतन में दमित व्यक्ति की सच्ची बातें निकल जाती हैं। इस संदर्भ में ब्राउन (Brown) ने अपने एक मित्र का उदाहरण दिया है जिसे अपने ऊपर बड़ा ही गर्व था। वह अपने को अन्य मित्रों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ समझता था तथा दूसरों को उतना महत्व नहीं देता था। एक बार वैज्ञानिकों की एक सभा में उसे अपने एक मित्र के लेख पर बधाई देनी थी। सामान्य रूप से उसे कहना था- क्या मैं इस महान् लेख पर अपना साधारण विचार प्रकट कर सकता हूँ। लेकिन उसने कहा- इस निम्न कोटि के लेख पर क्या मैं अपना महान् विचार प्रकट कर सकता हूँ। इसी तरह फ्रायड ने भी अपने एक युवा चिकित्सक से बोलने में हुई गलती का जिक्र किया है। वह युवा चिकित्सक एक बार किसी सभा में डॉ० विर्कोव (Dr. Virchow) के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के क्रम में स्वयं को अपने को डॉ० विर्कोव कहकर संबोधित किया। जब वहाँ उपस्थित लोगों ने यह जानना चाहा कि क्या उसका नाम विर्कोव ही है, उसे अपनी गलती का एहसास हुआ। फ्रायड ने इस गलती का विश्लेषण कर बताया कि वस्तुतः वह व्यक्ति अपने को डॉ० विर्कोव जैसा ही एक महान वैज्ञानिक सिद्ध करना चाहता था, जो अचेतन रूप से उनके सम्मान में बोलते समय बोलने की भूल के रूप में प्रकट हुई थी।